



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का आर्थिक विक्षेपण: विकास की संभावनाएं और चुनौतियां”

आलोक खरे¹, और नीरज तोपखाने^{2*}

शोधार्थी¹, और प्राध्यापक^{2*}

¹अर्थशास्त्र विभागए स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालयए सागरए मध्य प्रदेश . 470228

अमूर्त

यह अध्ययन सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का आर्थिक विक्षेपण करता है, जिसमें शिक्षा की क्षेत्रीय विकास में भूमिका और उसके विकास में आने वाली चुनौतियों की पहचान की गई है। शिक्षा मानव पूंजी को सशक्त बनाने, आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने और सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हालांकि, सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर कम साक्षरता दर, कमजोर अधोसंरचना और आर्थिक असमानताओं से प्रभावित है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था को सीधे प्रभावित करता है। शोध में शिक्षा और आर्थिक प्रगति के मध्य संबंध का अध्ययन किया गया है, जिसमें यह बताया गया है कि शिक्षा तक पहुंच बढ़ने से ग्रामीण समुदायों की उत्पादकता, रोजगार और आय में वृद्धि हो सकती है। इसके अलावा, वित्तीय संसाधनों की कमी, अधोसंरचना की खराब स्थिति, और गरीबी जैसी चुनौतियां ग्रामीण शिक्षा को बाधित करती हैं। नीतिगत सुझावों में सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा देना, ग्रामीण शिक्षा पर सरकारी व्यय में वृद्धि करना, और रोजगार क्षमता को बढ़ाने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को शामिल करना शामिल है। महिलाओं की शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया है, जिसे ग्रामीण

अर्थव्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण माना गया है। अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि लक्षित हस्तक्षेप और शिक्षा में निवेश ग्रामीण आबादी की आर्थिक स्थिति को बेहतर बना सकते हैं और लंबे समय से चली आ रही असमानताओं को दूर कर सकते हैं। शिक्षा को सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण साधन मानते हुए सभी हितधारकों की सहभागिता आवश्यक है।

कूटशब्द ग्रामीण शिक्षा, आर्थिक विकास, मानव पूंजी, सागर जिला, शैक्षिक असमानता, नीतिगत सिफारिशें इत्यादि।

परिचय

शिक्षा किसी भी समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास का मूल आधार होती है। यह न केवल मानव पूंजी को सशक्त करती है, बल्कि आर्थिक असमानताओं को समाप्त करने और सतत विकास को प्रोत्साहित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सागर जिला, मध्य प्रदेश का एक प्रमुख क्षेत्र है, जहां ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा का स्तर सामाजिक और आर्थिक विकास में बाधक रहा है। इस अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के आर्थिक महत्व, उसकी चुनौतियों और विकास की संभावनाओं का विश्लेषण करना है।

- ग्रामीण शिक्षा का आर्थिक महत्व

ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का आर्थिक महत्व स्पष्ट है। यह रोजगार के अवसरों को बढ़ाने, गरीबी को कम करने और महिलाओं को सशक्त बनाने में सहायक होती है। शिक्षा के माध्यम से ग्रामीण लोग अपने कौशल और ज्ञान में सुधार कर सकते हैं, जिससे उनकी उत्पादकता और आय में वृद्धि होती है। इसके अलावा, शिक्षा न केवल व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देती है बल्कि सामूहिक आर्थिक प्रगति में भी योगदान देती है। रॉबर्ट लुकास (1988) के अनुसार, "मानव पूंजी का विकास किसी भी क्षेत्र के आर्थिक विकास का प्रमुख घटक होता है।"

- सागर जिले की ग्रामीण अर्थव्यवस्था और शिक्षा

सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्र कृषि-प्रधान हैं, जहां शिक्षा की भूमिका सीमित है। सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों के प्रयासों के बावजूद, ग्रामीण शिक्षा की स्थिति संतोषजनक नहीं है। वर्ष 2021 में किए गए एक

सर्वेक्षण के अनुसार, सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में केवल 62% साक्षरता दर है, जो राष्ट्रीय औसत से कम है। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग, विशेष रूप से अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति, शिक्षा के प्रति उदासीनता दिखाते हैं।

स्रोत: ग्रामीण शिक्षा पर राष्ट्रीय सर्वेक्षण 2021

ग्रामीण शिक्षा में आर्थिक असमानता

सागर जिले में ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता और उपलब्धता में क्षेत्रीय और सामाजिक असमानता देखने को मिलती है। सरकारी स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं की कमी और शिक्षकों का अभाव शिक्षा प्रणाली की खामियां उजागर करता है। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के लिए बच्चों को स्कूल भेजना एक चुनौती है, क्योंकि वे बाल श्रम और पारिवारिक आय में योगदान के लिए मजबूर होते हैं। इस असमानता का सीधा प्रभाव ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। (राव, 2019) ने अपने अध्ययन में बताया कि "ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक असमानता शिक्षा तक सीमित पहुंच का प्रमुख कारण है।"

- शिक्षा के विकास में आने वाली आर्थिक चुनौतियां

सागर जिले में शिक्षा के विकास में आर्थिक बाधाएं सबसे बड़ी चुनौती हैं। इनमें प्रमुख रूप से शामिल हैं:

1^म वित्तीय संसाधनों की कमी

सरकारी योजनाओं के बावजूद, ग्रामीण शिक्षा पर खर्च होने वाला बजट अपर्याप्त है। इसके परिणामस्वरूप स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं का अभाव होता है।

विश्व बैंक 2020 की रिपोर्ट के अनुसार भारत में ग्रामीण शिक्षा पर औसत खर्च वैश्विक औसत से काफी कम है।

2^म बुनियादी ढांचे का अभाव

ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों की अधोसंरचना जैसे इमारतों, शौचालय, और पीने के पानी की कमी शिक्षा के विकास में बाधा बनती है।

यूनिसेफ 2021 ने अपनी रिपोर्ट में उल्लेख किया कि स्कूल अधोसंरचना की कमी से स्कूल छोड़ने वालों की दर बढ़ जाती है।

3^म शिक्षा में गरीबी का प्रभाव

गरीबी के कारण परिवार बच्चों को शिक्षा की जगह कृषि या घरेलू कार्यों में लगाते हैं। इसके परिणामस्वरूप सागर जिले के ग्रामीण इलाकों में बाल श्रम की समस्या गंभीर बनी हुई है।

सरकार 2018 के अनुसार गरीबी ग्रामीण शिक्षा के निम्न स्तर का सबसे बड़ा कारण है।

विकास की संभावनाएं और नीतिगत सुझाव

सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के विकास के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं:

1^म पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप ;

ग्रामीण शिक्षा के क्षेत्र में सार्वजनिक और निजी संगठनों की भागीदारी से वित्तीय और बुनियादी ढांचे की कमी को पूरा किया जा सकता है।

शर्मा 2020 ने अपने अध्ययन में दिखाया कि मॉडल ग्रामीण शिक्षा के लिए एक प्रभावी समाधान हो सकता है।

2^म तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा

ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देना, जो रोजगार के अवसर बढ़ाने में सहायक हो, आवश्यक है। (नेहरू, 2017) ने कहा, "तकनीकी शिक्षा ग्रामीण युवाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का प्रमुख साधन है।"

3^म महिलाओं की शिक्षा पर जोर

महिलाओं की शिक्षा पर ध्यान देना न केवल सामाजिक बल्कि आर्थिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है।

मिश्रा 2019 ने अपने शोध में बताया कि महिलाओं की शिक्षा ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती है।

सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के विकास के लिए आर्थिक चुनौतियों को दूर करना और नीति-निर्माण में सुधार आवश्यक है। शिक्षा में निवेश न केवल ग्रामीण क्षेत्रों में मानव पूंजी को सशक्त करेगा बल्कि स्थानीय और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में भी योगदान देगा। ग्रामीण शिक्षा का आर्थिक महत्व व्यापक है और इसे साकार करने के लिए सभी हितधारकों की सहभागिता आवश्यक है।

शोध पद्धति

इस अध्ययन में मिश्रित पद्धति (Mixed Methodology) का उपयोग किया गया है, जिसमें प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का सहारा लिया गया है। द्वितीयक स्रोतों में सरकारी रिपोर्ट, ग्रामीण शिक्षा पर राष्ट्रीय सर्वेक्षण, और विश्व बैंक व यूनिसेफ जैसी संस्थाओं के आंकड़ों का विश्लेषण शामिल है। प्राथमिक आंकड़ों के लिए क्षेत्रीय स्तर पर साक्षात्कार और फोकस ग्रुप चर्चा का आयोजन किया गया। डेटा संग्रह के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूना (Purposive Sampling) अपनाया गया, जिससे सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के स्तर और आर्थिक कारकों के संबंध का विश्लेषण किया जा सके। परिणामों का विश्लेषण सांख्यिकीय और गुणात्मक दोनों दृष्टिकोणों से किया गया।

परिणाम

इस अध्ययन के परिणाम सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और आर्थिक विकास के मध्य गहरे संबंध को उजागर करते हैं।

1^म शिक्षा का आर्थिक प्रभाव

- ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव

ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का सीधा प्रभाव स्थानीय अर्थव्यवस्था पर पड़ा है। शिक्षा ने न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि सामूहिक स्तर पर भी आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया है। सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में 2021 के एक सर्वेक्षण के अनुसार जिन परिवारों में साक्षरता दर 70% से अधिक थी उनकी औसत वार्षिक आय ₹1,50,000 थी जबकि 50% से कम साक्षरता दर वाले परिवारों की आय ₹90,000 तक सीमित रही।

स्रोत: ग्रामीण शिक्षा और आर्थिक विकास सर्वेक्षण 2021

- रोजगार के अवसर और आय में वृद्धि

शिक्षा प्राप्त करने वाले ग्रामीण युवाओं ने कृषि और गैर-कृषि दोनों क्षेत्रों में बेहतर रोजगार अवसर प्राप्त किए। कृषि क्षेत्र में योगदानरू शिक्षित किसानों ने आधुनिक कृषि तकनीकों जैसे ड्रिप इरिगेशन, जैविक खेती और फसल चक्र को अपनाया जिससे उनकी उत्पादकता 30% तक बढ़ी। गैर-कृषि रोजगाररू साक्षर युवाओं ने मनरेगा और कौशल विकास योजनाओं के माध्यम से रोजगार प्राप्त किया। राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना 2022 की रिपोर्ट

- कृषि उत्पादन में सुधार

जिन परिवारों में प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा का स्तर उच्च था उन्होंने उन्नत बीज, उर्वरक और नई कृषि पद्धतियों को अपनाया। इन परिवारों में प्रति हेक्टेयर उत्पादन 20.25% अधिक था। उदाहरण के लिए गेहूं की फसल में शिक्षित किसानों का उत्पादन 35 क्वंटल प्रति हेक्टेयर था जबकि अशिक्षित किसानों का औसत 28 क्वंटल प्रति हेक्टेयर रहा। कृषि विभाग, मध्य प्रदेश 2021

- महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक स्थिति पर प्रभाव

महिलाओं की शिक्षा ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दिया। महिला श्रमबल की भागीदारी से शिक्षित महिलाएं छोटे व्यवसाय, हस्तशिल्प और स्वयं सहायता समूह के माध्यम से पारिवारिक आय में 15.20% तक योगदान कर रही हैं। बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव से जिन परिवारों में महिलाएं शिक्षित थीं वहां बच्चों की स्कूल उपस्थिति 85% पाई गई जबकि अशिक्षित माताओं वाले परिवारों में यह केवल 65% थी।

- परिवार की आय और बचत

शिक्षित परिवारों में आय और बचत की प्रवृत्ति अधिक देखी गई। शिक्षित परिवारों में मासिक बचत औसतन ₹55,000 थी जबकि अशिक्षित परिवार ₹25,000 से अधिक बचत नहीं कर सके। वित्तीय प्रबंधन और सूक्ष्म ऋण योजनाओं के बारे में जानकारी होने के कारण शिक्षित परिवार आर्थिक आपदाओं से बेहतर तरीके से निपट सके। ग्रामीण परिवार बचत सर्वेक्षण 2022

2^अ आर्थिक असमानता और शिक्षा की पहुंच

- ग्रामीण शिक्षा और आर्थिक असमानता का संबंध

सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की पहुंच में आर्थिक असमानता सबसे बड़ी बाधा है। ग्रामीण समाज में आय के स्तर, सामाजिक वर्ग, और क्षेत्रीय विभाजन के आधार पर शिक्षा की गुणवत्ता और उपलब्धता में भारी अंतर देखने को मिलता है। यह असमानता विशेष रूप से अनुसूचित जाति (SC) और अनुसूचित जनजाति (ST) के परिवारों में अधिक स्पष्ट है, जहां गरीबी और सामाजिक वंचना के कारण बच्चों को शिक्षा से वंचित रहना पड़ता है।

- अनुसूचित जाति और जनजाति में शिक्षा का स्तर

राष्ट्रीय साक्षरता दर (2021) के अनुसार, सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में अनुसूचित जाति और जनजाति की साक्षरता दर क्रमशः 52% और 46% है, जो राज्य की औसत ग्रामीण साक्षरता दर 65% से काफी कम है।

प्राथमिक शिक्षा: SC और ST समुदायों के केवल 60% बच्चे प्राथमिक शिक्षा पूरी करते हैं, जबकि अन्य वर्गों में यह दर 78% है।

माध्यमिक शिक्षा: माध्यमिक स्तर पर यह अंतर और बढ़ जाता है, जहां SC और ST छात्रों की संख्या केवल 40% तक सीमित है। ग्रामीण शिक्षा सर्वेक्षण 2021

- गरीबी और बाल श्रम का प्रभाव

गरीबी के कारण कई परिवारों को अपने बच्चों को स्कूल छोड़कर बाल श्रम में लगाना पड़ता है। यह समस्या अनुसूचित जाति और जनजाति के परिवारों में अधिक गंभीर है।

बाल श्रम: अध्ययन के अनुसार, ग्रामीण सागर में 25% बच्चे आर्थिक तंगी के कारण स्कूल छोड़ देते हैं और खेतों या घरेलू कार्यों में लग जाते हैं।

आर्थिक दबाव: SC और ST परिवार अपनी मासिक आय का केवल 10-15% शिक्षा पर खर्च कर पाते हैं, जबकि यह प्रतिशत अन्य वर्गों में 25% है। ;स्रोतः बाल अधिकार और शिक्षा रिपोर्टए 2022द्व

- सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएं

आर्थिक असमानता के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताएं भी शिक्षा की पहुंच को सीमित करती हैं।

लड़कियों की शिक्षा: अनुसूचित जाति और जनजाति में, विशेष रूप से लड़कियों की शिक्षा उपेक्षित रहती है। उनके स्कूल छोड़ने की दर लड़कों से 20% अधिक है।

भेदभाव: अनुसूचित जाति और जनजाति के बच्चों को स्कूलों में भेदभाव का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी शैक्षणिक प्रगति प्रभावित होती है।

- अधोसंरचना की कमी

ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों की अधोसंरचना जैसे शौचालय, पेयजल, और बैठने की उचित व्यवस्था का अभाव शिक्षा की पहुंच को सीमित करता है। अनुसूचित जाति और जनजाति के बच्चों के लिए यह स्थिति और भी गंभीर है। 6 और 7 बहुल क्षेत्रों में 40: स्कूलों में पर्याप्त सुविधाओं का अभाव है। ;स्रोतः यूनिसेफ रिपोर्टए 2021द्व

- सरकारी योजनाओं और उनका प्रभाव

हालांकि, सरकार ने शिक्षा में असमानता को कम करने के लिए कई योजनाएं चलाई हैं, जैसे:

मिड-डे मील योजना: गरीब बच्चों को स्कूल में बनाए रखने के लिए भोजन प्रदान करती है।

छात्रवृत्ति कार्यक्रम: अनुसूचित जाति और जनजाति के छात्रों को वित्तीय सहायता दी जाती है।

लेकिन इन योजनाओं का प्रभाव सीमित है क्योंकि जमीनी स्तर पर जागरूकता और क्रियान्वयन में कई खामियां हैं।

- आर्थिक असमानता का शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रभाव

आर्थिक असमानता का प्रभाव केवल शिक्षा की पहुंच तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शिक्षा की गुणवत्ता पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है। SC और ST बच्चों को अक्सर कम योग्य शिक्षक और खराब अधोसंरचना वाले स्कूल मिलते हैं। इससे उनके शैक्षणिक प्रदर्शन में कमी आती है।

3^ण अधोसंरचना की कमी

अध्ययन में यह पाया गया कि अधिकांश ग्रामीण स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं जैसे शौचालय, पेयजल, और बैठने की उचित व्यवस्था का अभाव है। इसके कारण छात्रों, विशेष रूप से लड़कियों की उपस्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

4^ण वित्तीय संसाधनों की कमी

ग्रामीण शिक्षा में वित्तीय निवेश की कमी एक बड़ी चुनौती रही। सरकारी योजनाओं और नीतियों के बावजूद, बजट का पर्याप्त हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में नहीं पहुंच पा रहा है।

5^ण तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता

अध्ययन के दौरान यह स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण युवाओं के लिए तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा रोजगार के नए अवसर सृजित कर सकती है। हालांकि, वर्तमान में इस क्षेत्र में जागरूकता और सुविधाओं का अभाव है।

6^ण महिलाओं की शिक्षा का प्रभाव

महिलाओं की शिक्षा ने परिवारों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार किया है। शिक्षित महिलाओं के परिवारों में स्वास्थ्य, पोषण और बच्चों की शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया गया।

निष्कर्ष

सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर और इसका आर्थिक प्रभाव इस अध्ययन के केंद्र में रहा। प्राप्त परिणाम स्पष्ट रूप से यह दर्शाते हैं कि शिक्षा न केवल सामाजिक सशक्तिकरण का माध्यम है, बल्कि यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास का एक महत्वपूर्ण घटक भी है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा ने रोजगार के नए अवसर पैदा किए हैं, कृषि और गैर-कृषि गतिविधियों में उत्पादकता बढ़ाई है, और सामाजिक संरचना को मजबूत किया है।

हालांकि, शिक्षा के विकास में कई बाधाएं भी सामने आईं। आर्थिक असमानता, वित्तीय संसाधनों की कमी, और बुनियादी अधोसंरचना का अभाव ग्रामीण शिक्षा को गंभीर रूप से प्रभावित करता है। अनुसूचित जाति और जनजाति के समुदायों में शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत निम्न पाया गया, जिससे उनकी आर्थिक प्रगति बाधित होती है। बाल श्रम और गरीबी जैसे कारक भी ग्रामीण शिक्षा के विकास में बड़ी बाधा हैं।

इसके अतिरिक्त, तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा की कमी रोजगार के अवसरों को सीमित करती है। महिलाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है, क्योंकि शिक्षित महिलाएं न केवल परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारती हैं, बल्कि संपूर्ण सामाजिक संरचना को सशक्त बनाती हैं।

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के विकास के लिए नीति-निर्माताओं को वित्तीय निवेश में वृद्धि करनी होगी। सार्वजनिक-निजी भागीदारी को प्रोत्साहन देकर अधोसंरचना और संसाधनों की कमी को दूर किया जा सकता है। साथ ही, तकनीकी शिक्षा और कौशल विकास को बढ़ावा देना ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार के अवसर सुनिश्चित करेगा। शिक्षा को समग्र विकास का माध्यम मानते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी व्यापक पहुंच सुनिश्चित करना सागर जिले की आर्थिक प्रगति के लिए आवश्यक है। इसके बिना समावेशी और सतत विकास की कल्पना अधूरी है।

आभार

यह शोध कार्य सफलतापूर्वक संपन्न करने में मार्गदर्शन, सहयोग और प्रेरणा प्रदान करने वाले सभी शिक्षकों, सहकर्मियों, और परिवारजनों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

संदर्भ

- 1^० रॉबर्ट लुकास ;1988^० आर्थिक विकास में मानव पूंजी की भूमिका^०
- 2^० ग्रामीण शिक्षा पर राष्ट्रीय सर्वेक्षण ;2021^०
- 3^० राव ए ए ;2019^० ग्रामीण शिक्षा में आर्थिक असमानता^०
- 4^० विश्व बैंक ;2020^० विकासशील देशों में शिक्षा बजट का विश्लेषण^०
- 5^० यूनिसेफ ;2021^० ग्रामीण शिक्षा में अधोसंरचना की चुनौतियां^०
- 6^० सरकार ए पी ;2018^० भारत में ग्रामीण शिक्षा पर गरीबी का प्रभाव^०
- 7^० शर्मा ए डी ;2020^० शिक्षा क्षेत्र में सार्वजनिक, निजी भागीदारी मॉडल^०
- 8^० नेहरू वी ;2017^० ग्रामीण युवाओं के लिए व्यावसायिक शिक्षा^०
- 9^० मिश्रा ए आर ;2019^० ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की शिक्षा की भूमिका^०
- 10^० यूएनडीपी रिपोर्ट ;2020^० ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक असमानताएं^०
- 11^० ओईसीडी ;2021^० ग्रामीण शिक्षा का आर्थिक प्रभाव^०
- 12^० राष्ट्रीय शिक्षा नीति ;2020^०

